SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-03| March- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.19

मुग़लकाल में महिलाओं की दशा का:ऐतिहासिक अध्ययन

संतोष कुमार दुबे

सहायक प्राध्यापक इतिहास, शासकीय महाविद्यालय बरगवां,सिंगरौली म.प्र.

Email :-santoshkumardubey099@gmail.com

सार : किसी भी सभ्यता की आत्मा को समझने तथा उसकी उपलब्धियो एवं श्रेष्ठता का मुल्यांकन करने का सर्वोपरी आधार उस काल की महिलाओं की दशा का अध्ययन करना है। स्त्रियों की दशा किसी भी सभ्यता या संस्कृति का मापदंड माना जा सकता है। हॉलाकि भारत में स्त्रियों का इतिहास अत्यन्त गतिशील रहा है। इस लेख के माध्यम से मुगलकालीन महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक क्षेत्र में निभाई गई भूमिका को तथ्यों,रीति-रिवाजों के आधार पर परखने की चेष्टा की गई है। मुगल बादशाहों का महिलाओं के प्रति आचरण,व्यवहार,आदर,सम्मान एवं सहानुभूति की समीक्षा करने का प्रयास किया गया है। व्यापार एवं वाणिज्य,प्रशासनिक संचालन और वित्तीय प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका के योगदान का भी ऐतिहासिक साहित्यक ग्रंथो के आधार पर समझने का प्रयास किया गया है।

कुँजी शब्द :- सम्भ्रान्त वर्ग, पादशाह बेगम, 'शिकस्त', 'नस्तलीक' और 'नस्ख' सोहल और ध्रुपद,अतुन मामा ,हरम ,जनानखाना ,सती प्रथा, जौहर ,किञ्चनी ,पर्दा प्रथा , बहुविवाह , जागीर ।

इतिहास का सरल और सुपरिचित काल विभाजन वह है जो उसमें प्राचीन,मध्य,तथा आधुनिक युगों का भेद उपस्थित करता है अरबों की सिंध विजय (712 ई.) से लेकर मुग़ल साम्राज्य के पतन औरंगजेब की मृत्यु (1710 ई.)इस्लाम का उत्कर्ष रहा भारत में प्रथम और द्वितीय मुस्लिम साम्राज्य के रूप में खिलजी और तुगलकों का नाम दिया जाता है वे वास्तव में तुर्कों द्वारा साम्राजयवादी व्यवस्था स्थापित करने के एकांकी प्रयास थे किन्तु अनेक कारणों से निष्फल सिद्ध हुए इस दिशा में इससे अधिक ठोस प्रयास 16 विं और 17 वि में मुगलों ने किया I

भारत में मुग़ल साम्राज्य जिसे इतिहासकारों द्वारा तृतीय मुस्लिम साम्राज्य का नाम दिया गया की स्थापना मंगोलों की क्रूरता (पिता) तुर्कों की योग्यता (माता)और ईरानियों की विनीत शिष्टता(पालन पोषण)के समन्वय से परिपूर्ण जहीरुद्दीन बाबर द्वारा 1526 ई.में की गयी थी मुग़ल काल में महिलाओं की स्थिति एक जटिल और बहुआयामी विषय है, मध्यकालीन भारत में महिलाओं की स्थिति निम्न थी, उनके पास रोज़गार और शिक्षा के बहुत कम अवसर थे। महिलाओं की स्वतंत्रता और एजेंसी कठोर सांस्कृतिक मानकों और प्रथाओं से बाधित थी, जैसे कि सती प्रथा, बाल विवाह और पर्दा प्रथा ने महिलाओं को बहुत कम अवसर प्रदान किए, उन्हें बाहरी दुनिया से जुड़ने की मनाही थी और परिवार के पुरुष सदस्य उनके ठिकाने पर कड़ी नजर रखते थे।जिसमें विभिन्न प्रकार के धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक तत्वों का प्रभाव था। इस काल में महिलाओं के लिए अनेक बाधाएँ और सीमाएँ थीं इसके बावजूद, मुग़ल काल में महिलाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। जिसके कुछ उल्लेखनीय उदाहरण हैं नूरजहाँ-मुग़ल बादशाह जहांगीर की पत्नी, जिन्होंने अपने पति के शासनकाल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उनकी राजनीतिक सलाहकार बनीं। गुलबदन बेगम-एक मुग़ल राजकुमारी

जिन्होंने "हुमायूंनामा" नामक पुस्तक लिखी, जो मुग़ल इतिहास का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। रोज़ अफज़ा-एक मुग़ल राजकुमारी जिन्होंने अपने समय में महत्वपूर्ण योगदान दिया। साथ ही कुछ अन्य महिलाओं ने भी शिक्षा, संगीत, नृत्य और चित्रकला कला में भी में अपनी प्रतिभा दिखाई

मध्यकालीन समाज में सामान्यतया नारी की स्थिति समाज की प्रथाओं एवं परम्पराओं से जकड़ी हुई थी। उल्लेखनीय है कि समाज के विभिन्न वर्गों में नारी की स्थिति भिन्न-भिन्न दिखाई पड़ती है। **इस काल में स्त्री समाज सामान्यतया तीन वर्गों में बँटा था- (1) सम्भ्रान्त वर्ग की स्त्रियाँ (2) मध्यम वर्ग की स्त्रियाँ (3) निम्न वर्ग की स्त्रियाँ।** इन विभिन्न वर्गों की स्त्रियों की सामाजिक-आर्थिक दशाएँ भिन्न-भिन्न देखने को मिलती हैं।

सम्भ्रान्त वर्ग की स्त्रियाँ मुगलकालीन भारतीय समाज में उच्च वर्ग से सबंधित स्त्रियों का समाज में सम्मान था। जिनमें कुछ विशेषाधिकारों भी दिए गए थे मुगलकाल में जागीरदारीं अधिकारों के साथ साथ उनकों **विविध उपाधियों** से सम्मानित किया जाता था,जैसे **'मरियम मकानी','मरियमुस जनानी', बिलकिस मकानी, 'नूर महल' 'नूरजहाँ' 'शाह बेगम' 'मुमताज महल' 'साहिबातु जजमानी' पादशाह बेगम** आदि उपाधियां प्रदान की जाती थी।**मध्यम वर्ग की स्त्रियों मध्यम वर्ग** की स्त्रियाँ पारिवार संबधी सभी कार्यो में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण होती थी परिवार के प्रति उत्तरदायित्व के निर्वाह में सुख का अनुभव करती थीं। वे परिवार में कैद नहीं थी पर उन्हें उन सभी सुविधाओं से वंचित रहना पड़ता था जो सम्भ्रान्त वर्ग की महिलाओं को प्राप्त थी। सामान्यतया वे शिक्षा,कला और साहित्य में भी अभिरुचि रखती थीं।

निम्न वर्ग की स्त्रियाँ, अपने घरेलू कार्यों के अतिरिक्त जीवन-यापन के लिए घर से बाहर भी काम करती थीं। किसानों की स्त्रियाँ कृषि कार्य में अपने पतियों की सहायता करती थीं। इस वर्ग की स्त्रियां हल चलानें,बीज बोनें, फसल काटनें,निंदाई करनें, गोड़ाई करने, कपास चुनने, सूत कातते डलिया बनाने, रस्सी बनाने मेहनत मजदूरी से अपने परिवार का पालन पोषण करते हुए ग्रामीण अर्थव्यवस्था की धुरी थी I

मुगलकाल में महिलाओं की वास्तविक दशा को समझने के लिए मुग़ल बादशाहो के कालक्रमानुसार जानना आवश्यक है:

बाबर के काल में महिलाओं की स्थिति

मुग़ल वंश के संस्थापक बाबर के समय सल्तनत काल की अपेक्षा स्त्रियों की स्थिति अपेक्षाकृत अधिक सन्तुलित थी। बाबर ने तैमूर और चंगेज खाँ की परम्पराओं का अनुसरण किया और अपनी स्त्रियों को राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। परन्तु बाबर ने संप्रभुता का अधिकार उन्हें नहीं दिया। जिस समय बाबर के पिता उमर शेख मिर्जा की मृत्यु हुई (1494) उसकी उम्र 11 वर्ष की थी। अपनी दादी एहसान दौलत बेगम के निर्देश से बाबर ने प्रशासन का कार्य चलाया और अपनी स्थिति सुदृढ़ की।

बाबर की माँ **कुतलुक निगार खानम** सदैव युद्धों में बाबर के साथ रही। बाबर की पत्नी **मासूमा बेगम** ने अपने पति की कठिनाइयों में सर्वदा उसका साथ दिया। अपनी योग्यता के कारण दिल्ली दरबार में बाबर के समीप बैठती थी। बाबर की मृत्यु के 2.5 वर्ष बाद तक वह राजनीति में भाग लेती रही। बाबर की दूसरी पत्नी **बीवी मुबारिका** यूसुफजई कबीले की थी। यूसुफजाई कबीले के लोगों और बाबर के बीच उनसे समझौता करानें में योगदान दिया। जिसके कारण बाबर का अधिकार अफगानिस्तान पर बना रह सका।

हुमायूं के काल में महिलाओं की स्थिति

हुमायूँ के शासनकाल में बाबर की बड़ी बहन **खानजादा बेगम** ने दरबार में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। **मासूमा बेगम** की मृत्यु के बाद उसे **पादशाह बेगम'(First Lady of the Empire)** की उपाधि से विभूषित किया गया। उसने हुमायूँ और उसके भाइयों के बीच समझौता कराने का प्रयास किया, परन्तु वह असफल रही। हुमायूँ के चचेरे भाई सुल्तान मिर्जा की पत्नी **हराम बेगम** प्रशासकीय योग्यता के लिये प्रसिद्ध थी। उसे 'वली नियामत' की उपाधि मिली थी।1549 ई०में जब हुमायूँ काबुल से बल्ख पर आक्रमण के समय हराम बेगम के द्वारा सहायता प्रदान की गयी। 1566 में हराम बेगम ने काबुल की राजनीति में बड़ी रुचि दिखलाई परन्तु वह काबुल पर अधिकार न कर सकी। उसने बदख्शां के प्रशासन को सम्भाला। वह महत्वाकांक्षी महिला थी। अभिजात वर्ग के लोग और राजकीय परिवार के सदस्य उससे भयभीत रहते थे और उसका आदर करते थे।

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

अकबर के काल में महिलाओं की स्थिति

अकबर के समय में उसकी सौतेली माँ माहमचुचक बेगम का नाम उल्लेखनीय है। वह एक महत्वाकांक्षी महिला थी। उसका बेटा मिर्जा मोहम्मद हकीम काबुल का गवर्नर नियुक्त किया गया (1556)। माहम चुचक बेगम ने काबुल के प्रशासक को प्रभावित किया। अकबर की प्रमुख दाई महाम अनगा भी एक प्रभावशाली महिला थी। उसके कारण ही अकबर के संरक्षक बैराम खां का पतन हुआ। (1560-1562 के दो वर्षों तक अकबर के निर्णयों और दरबार पर स्त्रियों का पूर्ण प्रभाव रहा, जिसका नेतृत्व माहम अनगा कर रही थी। सन् 1562 में अकबर ने इन स्त्रियों के प्रभाव से अपने को मुक्त कर लिया अकबर के शासन काल में उसकी मां मरियम मकानी और उसकी पत्नी सलीमा बेगम राजनीति में अधिक रुचि लेती थीं। 1599 ई० में सलीम के विद्रोह करने पर मरियम मकानी ने अपना प्रभाव पिता-पुत्र पर डालकर समझौता कराया। 1601 ई० में दूसरी बार जब सलीम ने विद्रोह किया तो सलीमा बेगम और गुलबदन बेगम ने सलीम को अकबर से क्षमादान दिलाया।

जहांगीर के काल में महिलाओं की स्थिति

जहाँगीर के गद्दी पर कैने के एक वर्ष के बाद ने मिर्जा अजीज कोका के उकसाने पर जहाँगीर के पुत्र खुसरो विद्रोह कर दिया था। इसके कारण मिर्जा को मृत्यु दण्ड देने का निर्णय लिया गया , लेकिन सलीमा बेगम और जनानखाने के दबाव में विवश होकर मिर्जा अजीज कोका को क्षमा करना पड़ा। स्त्रियों के समझाने पर जहाँगीर ने खुसरो को अपने पास आने दिया।

जहाँगीर के शासनकाल मे नूरजहाँ सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र में अत्यन्त प्रभावशाली रही। उसने प्रशासन का कार्य चलाने के लिये अपना एक दल बनाया। उसने न केवल प्रशासनिक कार्यं बल्कि सैनिक क्षेत्र में भी अद्भुत कुशलता प्रदर्शित की जब उसने अपने पति जहाँगोर को महावत खां के चंगुल से छुड़वाया। नूरजहाँ ने सामाजिक क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया। उसने निर्धन मुसलमानों को सरकार की ओर से अनुदान दिया जिससे वे अपनी पुत्रियों का विवाह कर सकें। उसने नये-नये डिजाइनों के वस्त्रों का उपयोग किया और नये फैशन चलाये। जहाँगीर की मृत्यु के बाद शाहजहाँ के गद्दी पर बैठने के बाद उसने राजनीति से सन्यास ले लिया।

शाहजहाँ के काल में महिलाओं की स्थिति

शाहजहाँ के शासन काल में मुमताज महल ने राजनीति में अपना प्रभाव बनाये रखा। उसने गुजरात के गवर्नर सैफ खां को शाहजहाँ के क्रोध से बचा लिया। मनुची के अनुसार मुमताजमहल ने पुर्तगालियों के विरुद्ध सैनिक अभियान के लिये शाहजहाँ को प्रेरित किया 1631 मुमताज महल की मृत्यु के बाद शाहजहाँ की पुत्री जहांआरा ने राजनीति में रुचि दिखलाई और अपना प्रभाव स्थापित किया। जिस किसी को पदोन्नति के लिये सम्राट से प्रार्थना करनी होती थी वह जहांआरा के द्वारा अपना कार्य करवाता था।

जहांआरा के कारण शाहजहाँ ने औरंगजेब को कई बार क्षमा किया और उसको अपने पद पर बने रहने दिया। 1656 में गोलकुण्डा के सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह ने जहाँआरा को पत्र लिखा कि वह सम्राट पर अपना प्रभाव डाले और और उसके राज्य पर औरंगजेब के आक्रमण को रोकने में सहायता करे। उत्तराधिकार के संबंध में विजयी होने के बाद औरंगजेब ने अपने भाइयों को मरवा डाला और शाहजहाँ को कैद कर लिया। ऐसे समय में जहांआरा निरंतर शाहजहाँ की सेवा करती रही। जहांआरा अपने मृत भाइयों के बच्चों की देखभाल करती रही। औरंगजेब ने भी सदैव जहाँआरा का सम्मान किया

औरंगजेब के काल में महिलाओं की स्थिति

रोशनाराँ बेगम शाहजहाँ की दूसरी पुत्री थी। उसने सदैव औरंगजेब का साथ दिया। वह अपने बड़े भाई दारा की विरोधी थी और उसने दारा को मृत्यु दण्ड दोने के लिये दबाव डाला। औरंगजेब ने उसे 1669 ई० में 'शाह बेगम' को उपाधि दी और 5 लाख रुपया दिया। सन् 1662 में जब औरंगजेब के बीमार पड़ने पर, रोशनाराँ बेगम ने शाही मोहर अपने अधिकार में रखा और सम्राट की बीमारी को छिपाये रखा। औरंगजेब की पुत्रियों ने भी राजनीति में रुचि दिखलाई। जेबुन्निसा बेगम ने शाहनबाज खा को अपने पिता के हाथों दण्डित होने से बचा लिया।

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

व्यापारिक और आर्थिक कार्यों में भागीदारी

ऐसा समझा जाता है कि राजकीय परिवार की कुछ महिलाओं ने निजी अंतर्राष्ट्रीय समुद्री व्यापार की रुचि दिखलाई और माल भेजने के लिए अपने अपने अलग जहाजों की व्यवस्था की जहाँगीर की मां का जहाज 1200 टन माल ले जाने की क्षमता रखता था। इसी प्रकार नूरजहाँ के पास कई जहाज थे वह विदेशी व्यापार में दिलचस्पी रखती थी। नूरजहाँ का मुख्य प्रतिनिधि उसका भाई आसफ खाँ था। जहाँनारा भी अपना निजी व्यापार करती थी और उसके कई जहाज थे उसने अंग्रेज और हालैंड के व्यापारियों से सम्पर्क स्थापित किया और व्यापार में अधिक लाभ प्राप्त किया।

शैक्षणिक स्थिति

स्त्री शिक्षा सल्तनत काल में स्त्री शिक्षा की विस्तृत जानकारी नहीं मिलती लेकिन मुगल काल में अकबर ने स्त्री शिक्षा व्यवस्था पर कुछ ध्यान दिया। इस शिक्षा व्यवस्था का विवरण माँसरेट ने दिया है। अकबर ने फतेहपुर सीकरी में लड़कियों के लिए स्कूल खोला था। मुगल बादशाहों ने शाहजादियों की शिक्षा के लिए अध्यापिकाओं की नियुक्ति की जिनको **'अतुन मामा'** कहा जाता पाठ्यक्रम में फारसी,अरबी,इतिहास, कुरान आदि विषयों की शिक्षा सम्मिलित थी।

बाबर की पुत्री गुलबदन बेगम **'हुमायूँनामा'** की लेखक सबसे शिक्षित महिला थी। वह फारसी और तुर्की भाषायें अच्छी तरह जानती थी। बाबर की दूसरी पुत्री गुलरुख बेगम,अकबर की पत्नी सलीमा बेगम,और नूरजहाँ,मुमताज महल,जान बेगम जो अरबी,फारसी में पारंगत होने के साथ-साथ कविता लेखन-पठन और स्वयं का अपना एक ग्रन्थालय (LIBRARY) था। मुमताज महल ने संस्कृत के विद्वान श्रीधर मिश्र संरक्षण प्रदान किया था। दारा की तरह जहाँनारा ने अध्यात्मवाद पर रिसाले,फारसी में कवितायें,मुइनुद्दीन चिश्ती और उसके उत्तराधिकारियों की जीवनी लिखी। औरंगजेब ने अपनो पुत्री जेबुन्निसा बेगम जिसको कुरान जबानी याद था को पढ़ाने के लिये फारसी महिला और प्रमुख हफीजा मरियम मुल्ला सईद अशरफी मजन्द्रानी की नियुक्ति की उसने गणित और नक्षत्रशास्त्र का गहन अध्ययन किया। वह लेखनकला में भी प्रवीण थी और **'शिकस्त '**, **'नस्तलीक'** और **'नस्ख'** शैलियों में लिख सकती थी। उसने एक अनुवाद विभाग खोला और बहुत-सी सर्वोत्तम साहित्यिक पुस्तकों का अनुवाद कराया।कुछ मुग़ल स्त्रियों ने शिक्षा के प्रसार के लिये सूक्त खोले। हुमायूँ को पत्नी बेगा बेगम ने अपने पति के मकबरे के समीप सूक्त खोला। अकबर को दाई महाम अंगा ने दिल्ली की खैरुल मंजिल मस्जिद में एक स्कूल खुलवाया। जहाँनारा बेगम ने आगरा' की जामा मस्जिद में एक मदरसा खुलवाया। प्रान्तों में भी बहुत सी शिक्षित मुस्लिम महिलाओं ने शिक्षा के प्रसार के लिये संस्थायें खोलीं। जौनपुर के शर्की सुल्तान महमूदशाह की पत्नी बीवी राजी ने एक कालेज खुलवाया और विद्यार्थियों और अध्यापकों के पठन पाठन के लिये वजीफे दिये।

नृत्य और संगीत का पेशा अपनाने वाली स्त्रियों को **'किञ्चनी** कहा जाता था। उत्सवों में नाचने वाली स्त्रियों को बनियर ने उन्हें नर्तकी कहा है। अबुल फजल ने लिखा है कि विवाह और जन्मोत्सव के समय कुछ स्त्रियाँ सोहल और ध्रुपद को ताल बजाकर गाती थीं। ये स्त्रियाँ प्रायः मालवा और गुजरात की होती थीं I

मुगल काल में प्रचलित प्रमुख प्रथाएँ

पर्दा प्रथा : भारत में प्राचीन समय में पर्दा प्रथा का प्रचलन मुस्लिम आक्रमणकारीयों द्वारा भारत में सत्ता प्राप्त करने के साथ हुआ मुस्लिम स्त्रियां बुर्के का प्रयोग करती थी लेकिन नूरजहां को अपवाद कहा जा सकता है। जायसी तथा विद्यापति ने उत्तर प्रदेश एंव बंगाल में हिन्दू घरों में पर्दे के प्रचलन की बात कही है। धीरे-धीरे राजपूतों में भी इस प्रथा का प्रसार हुआ कुलीन घराने की स्त्रियां घर से बाहर घूंघट निकाल कर निकलती थीं। निम्न हिन्दू वर्ग की स्त्रियां पर्दा नहीं करती थीं। विशेष ध्यातव्य है कि दक्षिण भारत में इस समय पर्दा प्रथा नहीं थी।

बहु-विवाह :कुरान मुस्लिम वर्ग के लोगों को चार पत्नियां रखने की छूट देती है। किसी सीमा तक उच्च घरों में इस नियम को अपनाया भी गया था, परन्तु निम्न वर्ग के मुसलमानों में बहु-विवाह का प्रचलन नहीं था। सर्वसाधारण एक पत्नी व्रत का पालन करता था,

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

विधवाओं की स्थिति : विवाहित महिला के लिए पति की मृत्यु निःसंद`ह सबसे पीड़ादायक एवं शोक की घड़ी होती है इसके बाद हिन्दू औरते या तो सन्यासी जीवन व्यतीत करती या फिर सती। मुस्लिम महिलाओं को धार्मिक आधार पर दूसरी शादी की अनुमति थी लेकिन अल्तेकर का मानना है कि हिन्दुओं में तलाक की गुजाईश ही नहीं थी चाहे पति चरित्रहीन हो या क्रूर।मुगलकाल में मुगलों ने विधवा विवाह को प्रोत्साहित किया हॉलाकि अकबर ने हिन्दू रीति रिवाज के विरुद्ध जाकर इस प्रथा पर बल देते हुए कानुन बनाया।

कन्या वध : हिन्दू समाज में उस समय लड़कियों के जन्म को अपशकुन माना जाता था। समाज में प्रचलित रीति रिवाज के अनुसार लड़की के विवाह पर अत्यधिक खर्च होता था। समाज का अधिकांश वर्ग निर्धन था और वह इतना भारी खर्च नहीं कर सकता था। लड़की का विवाह न होना धर्म और समाज के विरुद्ध समझा जाता था। इसके अतिरिक्त मुसलमान हिन्दुओं की जवान लड़कियों को बलपूर्वक उठाकर ले जाते थे। इसलिए बहुत से हिन्दु लड़की के जन्म लेते ही उसे मार देते थे।

बाल विवाह : उस समय समाज में प्रचलित रीति रिवाजों के अनुसार लड़कियों का विवाह बहुत ही छोटी आयु भाव 6 से 8 वर्ष के भीतर कर दिया जाता था। परिणामस्वरूप उनकी शिक्षा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता था। छोटी आयु में विवाह होने के कारन उन्हें गृहस्थी की सभी जिम्मेदारियां उठानी पड़ती थी। कम उम्र में सन्तान पैदा होने के कारण उनके स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता था।

सती प्रथा : माना जाता है कि भारत में सती एक प्राचीन प्रथा और रिवाज रहा है। सती का अर्थ "निश्चित रूप से पती का मृत्योपरान्त पति से पुनः मिलना या पुनःमिलन। इस पुनःमिलन की प्रक्रिया में एक विधवा को अपने पति के साथ चिता में जिन्दा ही जल जाना पड़ता था। ऐसा न करने पर उसे पूरी जीवन पारिवारिक सदस्यों द्वारा उसे हीन लक्षण और घृणा की चुनौती से गुजरना पड़ता था। सर्वप्रथम बादशाह अकबर ने इस संबध में बाद में जहाँगीर तथा औरंगजैब ने आदेश पारित किया कि सामाजिक और पारिवारिक दबाव के कारण किसी भी विधवा को सती नही किया जाये।

जौहर : बहादूर और साहसी राजपूतों में जौहार की प्रथा का प्रचलन था। युद्धरत राजपूत सेना के सेनापति को युद्ध में हार का अंदेशा हो जाये तो अपने परिवार और बच्चों सहित किले के अन्दर गुफा में बंद कर स्वयं को अग्नि में समर्पित करने की प्रथा को जौहर कहा जाता था। जौहार प्रथा को अपनाने के पीछे भावना यह थी कि वह अपने महिलाओं और बच्चों को दुश्मनों के हाथों प्रताड़ित होने से बचाना चाहते थे। अबूल फजल ने चितौड़ में जौहर का वर्णन करते लिखा है कि "जब युद्ध में कोई अटल मुसीबत या खतरा या हार सामने आता दिखे तो एक पिठी चन्दन के लकड़ी की बनाई जाती जो बुत बड़ा होता. उस पर सुखी लकड़ी और तेल डाल दिया जाता। जिससे महिलाएँ व बच्चे जलकर राख हो जाए। इस प्रकार अपनी शान और औरतों की प्रतिष्ठा और गरिमा को बचाने के लिए राजपूतों ने इस प्रथा को अपनाए रखा।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि मुगलकालीन समाज में स्त्रियों की स्थिति सम्मानपूर्ण नहीं थी केवल उच्च वर्ग से सबंधित स्त्रियों को कुछ अधिकार प्राप्त थे I स्त्रियों को भोग विलास एवं मनोरंजन का साधन समझा जाता था. विशेष रूप से जन साधारण वर्ग की स्त्रियों की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। मुसलमान एवं हिन्दु जातियों में अनेक प्रकार की कुप्रथा प्रचलित जिनके कारण स्त्रियों का जीवन जानवरों से भी बदत्तर था। बादशाह एवं अमीर वर्ग के लोगों के लिए बनाये गए हरमों में अत्यन्त सुन्दर अदाकार नृत्य एवं संगीत कला में निपुण स्त्रियां यौवनावस्था तक रखी जाती थी उसके पश्चात्त उन्हें वहां से निकाल दिया जाता था। शेष जीवन में वे दर दर की ठोकरें खाने के लिए बाध्य हो जाती थी I

संदर्भ – सूची

1.डॉ.झारखण्डे चौबे,डॉ. कन्हैया लाल श्रीवास्तव, मध्ययुगीन भारतीय समाज एवं संस्कृति ,उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान 2015

2.एल पी शर्मा, मध्यकालीन भारत का इतिहास,लक्ष्मी नारायण अग्रवाल,आगरा, 2018

3.चौबे सौरभ कुमार, मध्यकालीन भारत युनिवर्सल बूक्स,2022

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

5.पूनम पंत ,मध्यकालीन भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका, तरुण प्रकाशन, 2001

6.हबीब इरफ़ान ,"मध्यकालीन भारत: एक सभ्यता का अध्ययन" राष्ट्रीय पुस्तक ट्रस्ट, 2007,

7.जीशान हुसैन 600-1750 ईस्वी के बीच भारत में महिलाओं की स्थिति (निबंध),2019

8.प्रो.सुगम आनंदः भारतीय इतिहास में नारी, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, 2007

9. मेहरा उमाशंकर, मध्यकालीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1989

10. अहमद डॉ. लईक : मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, इलाहाबाद, 2006

11. भारद्वाज दिनेशचंद्र मध्यकालीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति, आगरा, 1982

Cite this Article:
संतोष कुमार दुबे,“ मुग़लकाल में महिलाओं की दशा का:ऐतिहासिक अध्यय” *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 03, pp.172-177, March-2026. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

संतोष कुमार दुबे

For publication of research paper title

मुग़लकाल में महिलाओं की दशा का:ऐतिहासिक अध्ययन

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-03, Month March 2026, Impact Factor-RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.19